I

Lecture Series No:- 80.

Online Class.
Date- 17/7/2020
Day- Friday,
Time- 10:to10:45 AM

Topic.

(1) Refutation.

Dr. Sunita Kumari
Depart. of Philosophy.
B.A part - I
paper - II (H.)
A.N.D. College Shahpur patory,
Samastipur.

Ans:- Berkeley के अनुसार जगत में केवल दो ही प्रकार की सत्तायें हैं, एक तो द्रष्टा आत्मा और दूसरे प्रत्यय जो कि आत्मा द्वारा प्रत्यक्ष किये जाते हैं, इनके के अतिरिक्त जगत में अन्य कुछ नहीं है। Loke ने पदार्थ के प्राथमिक और गौण गुण में अन्तर किया और गौण गुणों को मन पर निर्भर मानकर प्राथमिक गुणों को मन के बाहर किसी बाह्य आधार में बतलाया। इस बाह्य आधार को (भी) ही वह जड़ पदार्थ कहता है, जब हम किसी भौतिक वस्तु को देखते हैं तो उस प्रक्रिया में एक और उसके विभिन्न गुणों की संवेदनायें होती है और दूसरी ओर उसके अस्तित्व की

P.T.O

II

(प्रतिक्रिया) वाली प्रतीति होती है। जब हमें संवेदनायें होती है। और दूसरी ओर उसके अस्तित्व की प्रतीति होती है। जब हमें संवेदनायें होती है। तो हम यह जानते हैं कि ये संवेदनायें आत्मगत है। अथवा वस्तुगत। बाहर से आनेवाली संवेदनाओं का मन के बाहर कोई न कोई आधार अवश्य होना चाहिए।

इस तर्क के आधार पर Locke जड़ तत्व की स्थापना करता है।

Locke द्वारा स्थापित जड़ तत्व की धारणा का खण्डन करने के लिए Berkeley द्वारा निम्नलिखित युक्तियाँ दी गई है।

(1.) प्राथमिक गुण भी आत्मगत है:
Loke के प्राथमिक और गौण गुणों के अन्तर अन्तर को मानकर Berkeley यह दिखलाता है कि जिन तर्कों के आधार पर Locke ने कुछ गुणों को गौण गुण सिद्ध किया है।

END.